International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

चूरू जिले के भित्ति चित्रों के अवशेष :–मन्दिरों के सन्दर्भ में

डॉ. नरेन्द्र कुमार
व्याख्याता, चित्रकला विभाग
राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

भित्ति चित्रण में भित्ति (दीवार) को प्रमुख अंग माना गया है। जिसे चूने अथवा गारे के लेप्य से पत्थरों व ईंटों द्वारा चून कर तैयार किया जाता है। जिसे भारतीय वांगमय साहित्य में कुड्य (दीवार) की संज्ञा दी गई है। जिस पर सौन्दर्य एवं सृजन की दृष्टि से किया हुआ अलंकरण भावाभिव्यक्ति तथा अनुकरण भित्ति चित्रण कहलाता है।

भित्ति चित्रों के क्षेत्र में राजस्थान अत्यधिक समृद्ध रहा है यहाँ के शासकों ने कई आकर्षक महल राजप्रसाद, दुर्ग, मन्दिर बनवाये और उनकी साज सज्जा के लिये भित्ति चित्रों ने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया। राजस्थान के आरम्भिक भित्ति चित्रों में अच्छी कलाकृतियाँ आमेर में आज भी देखी जा सकती हैं । आमेर में भित्ति चित्रों से मंडित छतरी में 1620 ईस्वी का लेख मिला है जिससे यह ज्ञात होता है कि यह छतरी तथा कथित भारमल की न होकर बल्कि राजा मानसिंह की है। तथा इसी क्रम में बैराठ, मोजमाबाद के भित्ति चित्र भी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

उल्लेखनीय रह हैं। वस्तुतः भित्ति अंकन की यह परम्परा समस्त राजस्थान में पल्लवित और विकसित हुई और व्यापक हो गई जिसे हम आज उत्कृष्ट रूप में ढूंढार, हाडोती, मेवाड़, मारवाड़, चूरू तथा शेखावाटी आदि के क्षेत्रों में व्यापक व विपुल रूप से फेली हुई देख सकते हैं।3

चूरूजिले में भी लघु चित्रों की भाँति भित्ति अंकन की एक महत्वपूर्ण परम्परा रही है जिसमें चूरू, सरदार शहर, रतनगढ़, तारानगर, सुजानगढ़, रतन नगर, राजगढ़, डूंगरगढ़ आदि प्रमुख कला केन्द्र रहे हैं। यहाँ के शासकों एवं सेठ साहूकारों में वास्तुशिल्प निर्माण के प्रति गहरी अभिरुचि थी जिससे उन्होंने कई मुख्य तथा अनुपम गढ़, हवेलियाँ, मन्दिर, छतरियाँ, कुएं आदि का निर्माण कराया और उन्हें विभिन्न प्रकार के कलात्मक भित्ति चित्रों से सुसज्जित और अलंकृत करवाया जो उनकी कलात्मक अभिरुचि का परिचायक है। राजप्रसादों की यह भित्ति अंकन परम्परा राजस्थान में सर्वप्रथम हवेलियों, मन्दिरों, छतरियों तथा जनसामान्य के भवनों तक व्यापक एवं लोकप्रिय हुई। जिससे चूरू व इसके क्षेत्र की हर पुरानी गली में उस समय की कला साधना दिखाई पड़ती है। जहाँ एक ओर इसके मन्दिरों की मूर्तियाँ विभिन्न भंगिमाओं में नृत्य करती प्रतीत होती हैं वहीं दूसरी ओर चूरू के भवनों और हवेलियों की भित्तियों पर मूर्तिमान गणपति अनुग्रह लुटाते हैं और चित्रित नायिकाएं रागिनियाँ छेड़ती हैं।

चूरू क्षेत्र के मन्दिरों एवं हवेलियों में जो भित्ति चित्र उपलब्ध हैं उनमें कुछ तो भवन निर्माण काल के समकालीन लगते हैं। लेकिन अधिकांश बाद में बने हुए प्रतीत होते हैं, जिनमें ऐतिहासिक अध्ययन से वास्तु निर्माण की कुछ जानकारी मिलती है जबकि उनमें उसी समय भित्ति अंकन का कोई विवरण नहीं मिलता है। वस्तुतः अनेक भित्तियों पर चित्र बाद में चित्रित हुए हैं, इसीलिए कई स्थानों पर अनेक चित्र पुनः चित्रित दिखाई देते हैं ।

मन्दिर का अर्थ स्पष्ट करते हुऐ कुछ विद्वानों ने कहा ''मंधतेऽत्र मंद किरच '' अर्थात किसीभी आवास गृह या वास स्थान को मन्दिर कहा गया है। ''मंद'' शब्द से मन्दिर की उत्पत्ति मानी गई है तथा मंद से ही मदर या मदार आदि शब्द व्युत्पन्न हुए मन्दर से तात्पर्य पर्वत या पर्वत का देवता माना गया है।

इसी प्रकार प्राचीन भारत में देवालय, देवस्थान, प्रासाद, हर्म्य विमान आदि शब्द मन्दिर के पर्याय रहे हैं। पाश्चात्य जगत में इसे टेम्पल कहा गया है जो कि लैटिन शब्द के ''टेम्पलम'' शब्द से उत्पन्न हुआ है। जिसका प्रयोग आयताकार देवालय के लिये हुआ है। रष्किन ने स्थापत्य का वर्गीकरण करते हुए स्थापत्य के भाग को भक्ति पूरक बताते हुये ''टेम्पल'' की परिभाषा ऐसा भवन के रूप में की जहाँ पूजा कार्य सम्पन्न किये जाते हैं

हमारे यहाँ भारत में मन्दिरों के निर्माण एवं मन्दिरों में भगवान के विग्रह की स्थापना एवं उनकी पूजा अर्चना की परम्परा अति प्राचीन कालसे ही भिन्न–भिन्न रूपों में रही है। जहाँ एक ओर यहाँ भौगोलिक वातावरण

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

व भिन्न संस्कृति ने मन्दिरों के स्थापत्य तथा ईश्वर को भी विभिन्न रूपों में आराधित किया है। उत्तर में कैलाश से लगाकर दक्षिण में रामेश्वरम् तक और पश्चिम में द्वारका से पूर्व में शिवसागर तक हमें देव मन्दिरों के दर्शन होते हैं और इन देव मन्दिरों ने राष्ट्र की एकरुपता को बनाये रखने में महत्वपूर्ण योग दिया है।

केवल भारतवर्ष में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी मन्दिरों की बहुता है। जिनके माध्यम से भारतीय संस्कृति दूर–दूर तक फैली है।

चूरू जिले में भी प्रारम्भ से ही धर्म, दर्शन और इष्ट देवों के प्रति यहाँ के जनमानस की प्रबल भावना त्याग, सहिष्णुता, दान, पुण्य आदि की रही है। उसी भावना से प्रेरित होकर यहाँ के वासियों ने अनेक भव्य देव मन्दिर, मस्जिद, उपासरे तथा देवलियां, समाधि स्थल आदि का निर्माण किया एवं उनके संचालन की व्यवस्था की है। इन मन्दिरों में भगवान के दर्शन और कथा वाचन के अतिरिक्त अन्य जनोपयोगी कार्य भी होते रहे हैं। साधु–सन्त धार्मिक ग्रन्थों का लेखन करते थे, इनके अतिरिक्त मन्दिरों में छाटे–छोटे विद्यालय भी चलते थे। स्वतन्त्र औषधालयों का निर्माण नहीं हुआ था। अतः मन्दिरों में रहने वाले साधु अपने अनुभवों के आधार पर चिकित्सा भी करते थे।

स्थापत्य की दृष्टि से उल्लेख्य है कि प्रारम्भ में यहाँ पर अपने–अपने इष्ट देवों को खेतों में कुओं के पास एक छोटी सी घुमटी बनाकर उसमें विराजित कर पूजा जाता था। जैसे–जैसे प्रगती हुई मन्दिरों के निर्माण व उसकी तकनीकि दोनों में परिवर्तन आया जिससे मन्दिरों के आकार सामान्य चौकोर हुए। जिनके अन्तर्गत इष्ट देवों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित कर उनकी पूजा अर्चना की जाने लगी। तत्पश्चात् चौहान काल में आते आते तो चूरू एवं इसके पास के क्षेत्रों में मन्दिर एवं स्थापत्यकला अपनी चरमसीमा पर रही जिसमें अनेकानेक देव मन्दिरों का निर्माण हुआ। इस सन्दर्भ में लाडनूं का प्राचीन दिगम्बर जैन मन्दिर उल्लेखनीय है। जिसका कि मुख्य मन्दिर तो जमीन से 10 फीट नीचे धंस गया। जिसमें शान्तिनाथ की संगमरमर की एक भव्य मूर्ति है जिसके तोरण पर आषढ़ शुक्ला 8 सं. 1136 का लेख भी है। कला की दृष्टि से यह तोरण स्थापत्य का एक दुर्लभ नमूना यह तोरण स्थापत्य का एक दुर्लभ नमूना है। इसके अतिरिक्त अन्य अनुपम मूर्तियाँ और भी हैं। इसी प्रकार ग्राम पल्लू से प्राप्त सरस्वती की दो मूर्तियां भी कला की दृष्टि से बेजोड़ हैं। सरस्वती की ये मूर्तियाँ जहाँ उत्कृष्ट स्थापत्य की घोतक है वहीं साहित्य और संगीत के चरमोत्कर्ष की और भी संकेत करती है। इन मूर्तियों की साज सज्जा और उत्कृष्ट वेश–भूषा से जहाँ समाज की उच्च उभिरुचि का पता लगता है वहाँ मूर्तियों के विविध आभूषण तत्कालीन समाज की समृद्धि की ओर संकेत करते हैं। ग्राम पल्लू से ही प्राप्त 11वीं शताब्दी की नन्दी पर सवार '' उमा महेश्वर'' की सुन्दर मूर्ति इस क्षेत्र में शिव की पूजा का संकेत करती है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

इसी प्रकार रेणी तारानगर में 10वीं शताब्दी का बना जैन मन्दिर आज भी विद्यमान है और सम्भवतः सम्पूर्ण बीकानेर सम्भाग का सबसे प्राचीन मन्दिर है। स्थानण (त. सुजानगढ़) की पहाड़ी पर उस काल के बने कलापूर्ण मन्दिरों के अवशेष प्राप्त हैं। जिनके खम्भे पर की गई उत्कृष्ट खुदाई वमूर्तियाँ आदि कला के बेजोड़ नमूने हैं जो कि बाहरी आक्रान्ताओं की वजह से नष्ट हो गये हैं। जिनके अवशेष आज भी अपनी तत्कालीन समय की कला साधाना के साक्ष्य हैं।

इसी प्रकार अमरसर से प्राप्त 16 मूर्तियों में दो संगमरमर की और 14 धातु की हैं। संगमरमर की दानों मूर्तियाँ जैन तीर्थंकरों की हैं वे भी तत्कालीन कला की उत्कृष्ट मूर्तियाँ हैं जो अब बीकानेर संग्रहालय में सुरक्षित हैं। इनके अतिरिक्त शेखावाटी स्थित हर्ष और जीणमाता के उत्कृष्ट मन्दिर भीचूरू से ही सम्बन्धित घांघु नामक ठिकाने के राजकुमार एवं राजकुमारी जिन्होंने अपनी हट के कारण सांसारिक जीवन छोड़कर गहन तपस्या की जिससे उन्हें देवत्व पद प्राप्त हो पूजित हुये जिनके प्रसिद्ध मन्दिर हर्ष और जीण आज भी प्रसिद्ध हैं।

चौहानों के पश्चात इस क्षेत्र में भी अस्थिरता आ गई थी। कला एवं संस्कृति का खूब ह्रास हुआ और स्थानीय जमीदार तथा ठिकानेदारों में आपसी कलह होने लगे जिससे उत्कृष्ट कला के नमूने कलावशेष ही बन कर रह गये। बाद में 14वीं शती में राठौड़ों के आगमन से इस क्षेत्र में फिर से प्रगति और विकास का नया सूत्रपात प्रारम्भ हुआ जिससे स्थापत्य कला के साथ–साथ भित्ति चित्रण कला का भी नया सूत्रपात प्रारम्भ हुआ। इस समय के मन्दिरों के निर्माण की दिशा में एक नया अध्याय जुड़ा जिसमें पूर्व निर्मित मन्दिरों में प्रायः गुमटियाँ नहीं बनाई जाती थी। लेकिन राठौड़ों के समय चूरू किले में बने मन्दिर गुमटियाँ बनाकर उन पर कलश चढ़ाये गये जिससे चूरू के मन्दिर स्थापत्य में एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात तो चूरू में मन्दिर निर्माण की परम्परा में लगातार अभिवृद्धि होती गई जिससे अनेक विशालकाय भव्य देव मन्दिरों का निर्माण हुआ जिसमें अनेक प्रकार की गुमटियाँ, गोल, लम्बी आदि विभिन्न प्रकार की बनाई गई और इन भव्य देव मन्दिरों के निर्माण के साथ–साथ इनकी भित्तियों को भी अनेक इष्ट देवों, धार्मिक कथाओं तथा धर्मोपदेशों के अलंकरण आदि का व्यापक चित्रण कार्य भी किया गया। जिनमें प्राचीनता की दृष्टि से तारानगर का शीतलानाथ मन्दिर सर्वाधिक प्राचीन है। राजदलेसर का आदिनाथ मन्दिर का निर्माण समय सम्वतः 1584 (सन् 1527 ई.) माना जाता है। लेकिन भित्ति चित्रों की उत्कृष्ट कला की दृष्टि से निम्न मन्दिर मुख्य रहे हैं। शान्तिनाथ मन्दिर चूरू, दिगम्बर शिखर जैन मन्दिर चूरू, ठाकुर जी का मन्दिर भालेरी (तारानगर), रघुनाथजी का मन्दिर, बिलासराज केड़िया, रतननगर, बाघलों का राम मन्दिर एवं शिव मन्दिर, चूरू, मून्दड़ों का मन्दिर डूंगरगढ, राम मन्दिर सरदार शहर, शिव मन्दिर चांद गोठियाँ रतनगढ़, शिव मन्दिर पोद्दार अतिथीगृह रतनगढ़, हनुमानजी का मन्दिर सालासर (त. डूंगरगढ़) आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ठाकुरजी का मन्दिर भालेरी, भालेरी

यति रिधकरण जी का उपासरा, चूरू

चांद गोठीया शिवजी का मन्दिर, रतनगढ़

शिव मन्दिर, पोद्दार अतिथीगृह, रतनगढ़

..मून्दड़ो का राम मन्दिर, डूंगरगढ़

हनुमान मन्दिर, सालासर

रघुनाथ जी का मन्दिर विलासराज केडिया, रतन नगर

राम मन्दिर, सरदार शहर आदि अनेक प्रसिद्ध मन्दिर रहे है।

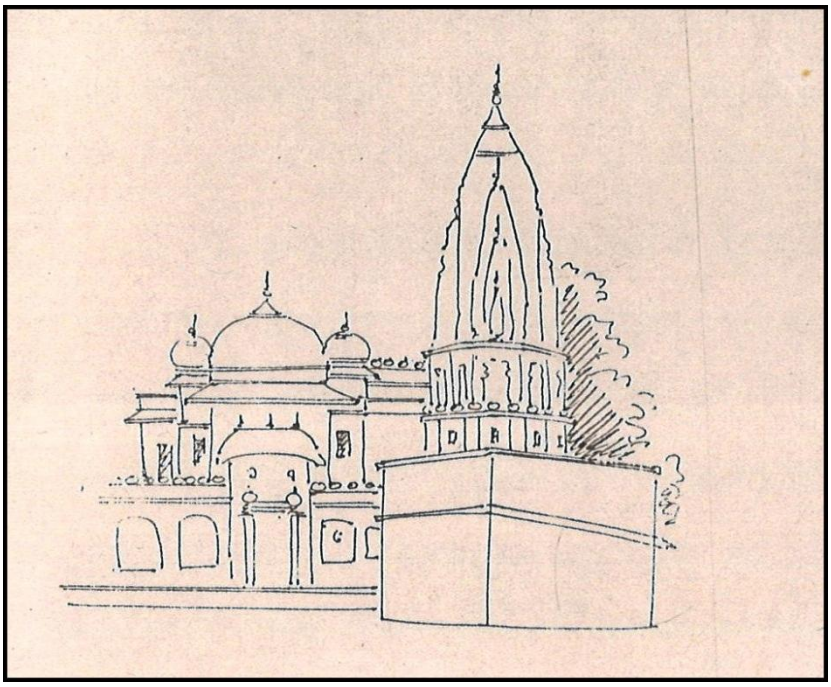

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 1, January- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संन्दर्भ –

1. बद्री नारायण वर्मा कोटा भित्ति चित्रांकन परम्परा, पृ.48
2. ममता चतुर्वेदी जयपुर शैली के भित्ति चित्र, पृ.69 अप्रकाशित शोध ग्रन्थ)
3. वही, पृ.70
4. कल्याण, भगवान विष्णु के चौबीस अवतार, जनवरी, 1973, वो. 1
5. Stuart Carywelch - Persian Painting, New York / प्रमोद कुमार सीकर के भित्ति चित्र, P.R.H.C./पद्मश्री कृपाल सिंह केकथनानुसार
6. सगत सिंह राजस्थानी चित्रकला में रागों का स्वरूप, राजस्थान भारती, भाग–11. पृ.147
7. क्लाज एवलिंग रागमाला पेंटिग्स, पृ. 28
8. डॉ. हरमन गोएट्ज– आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर स्टेट, पृ. 19, प्लेट न. 2 और पृ.55 प्लेट न. 4
9. सगत सिंह –राजस्थानी चित्रकला में रागों का स्वरूप राजस्थान भारती, भाग–11. पू.148
10. डॉ. सुमहेन्द्र शर्मा –राजस्थानी चित्रों में रागमाला
11. ममता चतुर्वेदी– जयपुर शैली के भित्ति चित्र, पृ. (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ)
12. बनराज जोशी – चूरू दर्शन, पृ.48
13. विजय शंकर श्रीवास्तव शेखावाटी के भित्ति चित्रों में ऐतिहासिक कथानक एवं सामाजिक प्रथाएं, वरदा, वर्ष 28, अंक 2
14. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक पोद्दार स्मृति पुष्पि ग्रन्थ, पृ.298
15. राजस्थान के इस प्रदेश में विवाहोत्सव के समय अग्नि की वेदी के पास साथ में जो चार छोटी लकड़ियाँ व तख्ती से युक्त बांस बांधा जाताहै उसे धाम कहते हैं।
16. बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक – पोद्दार स्मृति पुष्पि ग्रन्थ, पृ. 290
17. डॉ. कृष्ण कुमार शर्मा – राजस्थानी लोक गाथा का अध्ययन, पृ. 123–24
18. सुबोध अग्रवाल – मरु श्री, वर्ष 15, अंक 2–3
19. कुवर संग्राम सिंह जी के अनुसार
20. उक्त चित्र प्रसिद्ध चित्रकार श्री वेदपाल शर्मा (बन्नू जी) के कथनानुसार इस प्रकार का चित्रण करौली शैली में भी चित्रित किया गय है। बरुआ ऋषि जैमिनी कौशिक – पोद्दार स्मृति पुष्पि ग्रन्थ, पृ. 298
21. डॉ. सत्य प्रकाश – राजस्थानी स्थापत्य सम्बन्धि नित्य प्रयोग के शब्द, रिसर्चर, पृ. 102–3
22. सुबोध अग्रवाल– मरुश्री, वर्ष 14, अंक 2,3